International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(II), January - March, 2023, pp. 71-75

पुनर्निर्माण शिक्षा प्रणाली के लिए बहुआयामी शिक्षा

निकिता गर्ग*

सार

(शिक्षा एक ऐसी संचेतन एवं विचारपूर्ण प्रक्रिया है, जिसमें एक व्यक्ति दूसरे पर इसलिए प्रभाव डालता है कि दूसरे का विकास और परिवर्तन हो सके। शिक्षा शास्त्रियों का विचार है कि शिक्षा एक परिवर्तन है। यह व्यक्ति के व्यवहार एवं आचार–विचार में परिवर्तन लाती है। जन्म के समय बालक असहाय, अव्यावहारिक एवं अशिक्षित होता है। शिक्षा ही उसे व्यावहारिक, शिक्षित, सभ्य, सुसंस्कृत एवं परिष्कृत बनाती है । प्राचीन भारतीय शिक्षा दो वर्गों में विभाजित हो जाती है वैदिक कालीन शिक्षा और बौद्ध कालीन शिक्षा । वैदिक काल में वेदों की प्रधानता रही । वैदिक काल में शिक्षा जीवन के मूल लक्ष्य 'मोक्ष' की प्राप्ति का एक साधन था । मध्यकाल में जहाँ एक ओर शिक्षा को प्रोत्साहन मिला वहीं दूसरी ओर शिक्षा की व्यापकता का अभाव था। प्रान्तीय भाषाओं की उपेक्षा की गई । 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अंग्रेजों द्वारा प्रचलित देशी शिक्षा व्यवस्था की जाँच की गई। जिसमें अंग्रेजों द्वारा अनेक आदेश / परिवर्तन किये गये। अंग्रेजों की स्वार्थपरायणता, घन लोलुपता एवं व्यापारिक एकाधिकार और राजनीतिक स्वामित्व को चिरस्थायी बनाए रखने की अभिलाषा ने आर्थिक संकटों से आवृत देशी शिक्षा का गला घोंट दिया । देशी शिक्षा का पतन ब्रिटिश शिक्षा नीति के परिणाम स्वरुप हुआ । उसके बाद अनेक आयोग आये समितियाँ गठित हुई तथा नीतियाँ घोषित की गई. कार्यक्रम बने जिन्होंने शिक्षा को अपने–अपने अनुसार परिवर्तित किया । शिक्षा के उद्देश्यों में अन्तर आया । शिक्षा व्यवस्था में अंतर आया । उच्चतर शिक्षा के बारे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य जोर उच्चतर शिक्षा संस्थानों को बड़े एवं बहु–विषयक विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और एचई आई कलस्टरों / नॉलेज हबों में स्थानांतरित करके उच्चतर शिक्षा के विखंडन को समाप्त करना है।)

शब्दकोशः *पुनर्निर्माण शिक्षा प्रणाली, बहुआयामी शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, ब्रिटिश शिक्षा नीति।*

प्रस्तावना

शिक्षा विकास का क्रम है, जिससे व्यक्ति अपने को धीरे–धीरे विभिन्न प्रकार से अपने भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है । व्यक्ति अपने व्यवसाय, पारिवारिक जीवन, मित्रता, विवाह पितृत्व मनोरंजन यात्रा आदि द्वारा शिक्षित किया जाता है। बालक की व्यक्तिगत रुचियों, क्षमताओं योग्यताओं तथा सामाजिक आदर्श को ध्यान में रखते हुए आवश्यकता अनुसार स्वतन्त्रता प्रदान करके उसका बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक विकास करती है एवं उसके व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करती है कि व्यक्ति तथा समाज दोनों ही उन्नति के शिखर पर चढ़ते रहें। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्तियों के स्वाभाविक और सांमजस्यपूर्ण विकास में योग देती है, उसकी ब्यक्तिकता का पूर्ण विकास करती है, उसे अपने आस–पास के परिवेश

* सहायक आचार्य, एस. एस. जी. पारीक स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

के अनुसार सांमजस्य स्थापित करने में सहायता देती है। प्रत्येक व्यक्ते जीवन पर्यन्त अनुभव प्राप्त करता है । अनुभव प्राप्त करने से हमारी सभी ज्ञानेन्द्रियाँ लिप्त रहती हैं । सुकरात महोदय ने शिक्षा को प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में अद्रश्य रूप से विद्यमान संसार के सर्वमान्य विचारों को प्रकाश में लाना बताया है ।

शिक्षा एक ऐसी संचेतन एवं विचारपूर्ण प्रक्रिया है, जिसमें एक व्यक्ति दूसरे पर इसलिए प्रभाव डालता है कि दूसरे का विकास और परिवर्तन हो सके। शिक्षा शास्त्रियों का विचार है कि शिक्षा एक परिवर्तन है। यह व्यक्ति के व्यवहार एवं आचार–विचार में परिवर्तन लाती है । जन्म के समय बालक असहाय, अव्यावहारिक एवं अशिक्षित होता है। शिक्षा ही उसे व्यावहारिक, शिक्षित, सभ्य, सुसंस्कृत एवं परिष्कृत बनाती है । शिक्षा, बालक को दो प्रकार से दी जा सकती है। एक तरीका औपचारिक है तथा दूसरा अनौपचारिक है । अनौपचारिक शिक्षा जीवन से सम्बन्धित स्थित वे अनुभव है, जिन्हें हम बिना किसी व्यवाधित प्रयास की शिक्षा प्रत्यक्ष रूप से जीवन से सम्बन्धित होती है तथा यह जीवन पर्यन्त चलती रहती है। इस प्रकार की शिक्षा सरल, स्वाभाविक व प्राकृतिक रूप से होती है। यह अभौतिक, मानवीय, भावनात्मक तथा संस्कृति प्रधान होती है। यह कष्ट साध्य एवं श्रम साध्य नहीं होती यह सुखद एवं मनोरंजन कारी होती है। वहीं यदि बात करें औपचारिक शिक्षा की तो वो इसके बिल्कुल विपरीत होती है । औपचारिक शिक्षा कृ त्रिम, जटिल तथा अप्राकृतिक होती है, जिसे प्राप्त तथा प्रदान करने के लिए सुनियोजित क्रियाएँ तथा कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। इस प्रकार की शिक्षा में सचेष्ट प्रयासों तथा व्यवस्था की आवश्यकता होती है। यह मुख्यतः भौतिक होती है, जो हमें भौतिक साधन जयने की योग्यता प्रदान करती है । औपचारिक रूप से दी जाने वाली शिक्षा उद्देश्य केन्द्रित होती है । इसका उद्देश्य बालक को इस योग्य बनाना है कि वह एक निश्चित परीक्षा उत्तीर्ण कर कोई प्रमाण पत्र प्राप्त करले तथा किन्ही निश्चित विषयों की विषयवस्तु का ज्ञान प्राप्त कर ले । विद्यालय औपचारिक शिक्षा प्रदान करने का सबसे महत्वपूर्ण अभिकरण है ।

किसी भी देश की औपचारिक शिक्षा वहाँ की परीक्षा प्रणाली या शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करती है । जिस प्रकार की देश की शिक्षा प्रणाली होती है उसी के आधार पर विद्यार्थी को डिग्री या उपाधि प्रदान की जाती है । भारत वर्ष में कालान्तर में शिक्षा प्रणाली अनेक प्रकार की रही है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक शिक्षा प्रणाली परिवर्तित होती रही है। प्राचीन भारतीय शिक्षा दो वर्गो में विभाजित हो जाती है वैदिक कालीन शिक्षा और बौद्ध कालीन शिक्षा । वैदिक काल में वेदों की प्रधानता रही । वैदिक काल में शिक्षा जीवन के मूल लक्ष्य 'मोक्ष' की प्राप्ति का एक साधन था । इसी भावना से प्रेरित होकर प्राचीन भारतीय ऋषियों ने शिक्षा को धार्मिक क्रियाओं से ओत प्रोत कर मानव के सर्वांगीण विकास की प्रेरणा दी। इस काल में बालक के शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक पक्षों का विकास कर उसे कुशल सामाजिक प्राणी बनाना ही मुख्य उद्देश्य था। वैदिक काल की सम्पूर्ण परिस्थिति तथा आज के युग की पूर्ण परिस्थिति में बहुत अन्तर है । भारत में वैदिक काल के बाद बौद्ध काल का प्रादुर्भाव हुआ। उस काल में शिक्षा का उद्देश्य निर्वाण प्राप्त करना था । लिखना, पढना, साधारण गणित के ज्ञान के साथ–साथ धर्म, शास्त्र, आयुर्वेद आदि प्रकार की शिक्षा दी जाती थी । बौद्ध बिसरों में उच्च जीवन व्यतीत करने पर बल दिया जाता था। दार्शनिक, धार्मिक के साथ–साथ सांसारिक शिक्षा भी थी। मध्यकाल आते आते शिक्षा का स्वरुप थोड़ा बदला हुआ था। मुस्लिम शासको ने इस्लाम धर्म का प्रचार करने की भावना से प्रेरित होकर भारत में मुस्लिम शिक्षा व्यवस्था प्रारम्भ की। जहाँ वैदिक काल और बौद्ध काल में शिक्षा व्यवस्था का राज्य से कोई सम्बन्ध का न था । वहीं शिक्षा को पूरी तरह शासकों को ही सौंप दिया गया। या यों कहें कि शिक्षा व्यवस्था पूर्णतः राज्याश्रित थी । मुस्लिम शासको की रुचि के अनुसार शिक्षा में प्रसार हुआ अन्यथा विनाश हो गया । मुस्लिम कालीन शिक्षा के उद्देश्य थे– ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करना, इस्लाम धर्म का प्रचार करना, एक विशिष्ट नैतिकता का प्रचार करना, मुस्लिम सिद्धान्तों– कानूनों तथा सामाजिक प्रथाओं का प्रचार, सांसारिक ऐश्वर्य की प्राप्ति, मुस्लिम शासन को मजबूत बनाना तथा मुसलमान को धर्म – परायण बनाना। प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था मकतकों में, उच्च शिक्षा मदरसों में दी जाती थी । उच्च शिक्षा का पाठ्यक्रम लौकिक शिक्षा और धार्मिक शिक्षा से ओतप्रोत था । मध्यकाल में जहाँ एक ओर शिक्षा को प्रोत्साहन मिला वहीं दूसरी ओर शिक्षा की व्यापकता का अभाव था। प्रान्तीय भाषाओं की उपेक्षा की गई । स्त्री शिक्षा का अभाव था । उच्च व्यावसायिक शिक्षा पर पर्याप्त बल नहीं दिया जाता था। मुस्लिम काल में भारत अपनी परम्परागत प्रसिद्धि जो इसने वैदिक काल मे प्राप्त की हुई थी, लगभग खो बैठा था ।

19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अंग्रेजों द्वारा प्रचलित देशी शिक्षा व्यवस्था की जाँच की गई। जिसमें अग्रेजों द्वारा अनेक आदेश/ परिवर्तन किये गये । अंग्रेजों की स्वार्थ–परायणता, धन लोलुपता एवं व्यापारिक एकाधिकार और राजनीतिक स्वामित्व को चिरस्थायी बनाए रखने की अभिलाषा ने आर्थिक संकटों से आवृत देशी शिक्षा का गला घोट दिया । देशी शिक्षा का पतन ब्रिटिश शिक्षा नीति के परिणाम स्वरुप हुआ । उसके बाद अनेक आयोग आये समितियाँ गठित हुई तथा नीतियाँ घोषित की गई, कार्यक्रम बने जिन्होंने शिक्षा को अपने – अपने अनुसार परिवर्तित किया । शिक्षा के उद्देश्यों में अन्तर आया । शिक्षा व्यवस्था में अंतर आया ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् पहला आयोग विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (राधाकृष्णन आयोग) आया । उसने विश्वविद्यालय शिक्षा की समीक्षा कर उसके होने वाले सुधारों एवं विस्तारों के संबंध में संस्तुतियाँ दी, पूर्व भारत की सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ बहुत अलग थी किन्तु भारत के स्वतंत्र होने के उपरांत राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थितियों में बहुत परिवर्तन आया । विश्वविद्यालय, समाजसुधार में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते थे इसलिए इस आयोग का उद्देश्य ऐसे नागरिक का निर्माण करना था जो दूरदर्शी, बुद्धिमान तथा साहसी हों । इस आयोग ने शिक्षा व्यवस्था 12+3+2 की व्यवस्था की । विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग उच्च स्तरीय शिक्षा के विषय में विस्तृत आयोग था । 1952–54 में जब माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर आयोग) आया वो उसने माध्यमिक शिक्षा में सुधार हेतु कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये । इन दोनों ही आयोगों के बाद 1964–66 में भारतीय शिक्षा आयोग आया। यह आयोग बालक की प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा से सम्बन्धित था । इस आयोग ने 10 वर्ष की सामान्य शिक्षा, कोर्स 3 वर्ष का प्रथम डिग्री , 2 या 3 वर्ष का द्वितीय डिग्री कोर्स तथा 2 या 3 वर्ष का स्नातकोत्तर कोर्स की शिक्षा संरचना की अनुशंसा की । उच्चशिक्षा में भी सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा का अलग –2 समय बताया । कोठारी आयोग 1964–66 की संस्तुतियों का क्रियान्वयन करने के लिए 1968 में शिक्षा नीति बनी। 1975 में 10+2+3 शिक्षा का नया ढांचा अपनाया गया । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत पूरे देश में एक ही शिक्षा व्यवस्था 10+2+3 को रखा गया । स्त्री शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा आदि के प्रवधान बताये गये है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 घोषित की गई है । इसमें उच्च शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण होने तथा भारत की अर्थव्यवस्था को ज्ञान आधारित के लिए अनेक प्रावधान बताए हैं । यह नीति उच्चतर शिक्षा प्रणाली में आमूल–चूल बदलाव और नए जोश के संचार के लिए उपयुक्त चुनौतियों को दूर करने के लिए कहती है । जिससे सभी युवा लोगों को उनकी आकांक्षा के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण, समान अवसर देने वाली एवं समावेशी उच्चतर शिक्षा मिले। इस नीति की दृष्टि में वर्तमान उच्चतर शिक्षा प्रणाली में निम्नलिखित कुछ परिवर्तन हो सकते है–

- ऐसी उच्चतर शिक्षा व्यवस्था की ओर बढ़ना जिसमें विशाल बहु विषयक विश्वविद्यालय और महाविद्यालय हों, जहाँ प्रत्येक जिले में या उसके पास कम से कम एक और पूरे भारत में अधिकतर एचईआई ऐसे ही हो, जो स्थानीय / भारतीय भाषाओं में शिक्षा या कार्यक्रमों का माध्यम प्रदान करते हों ।
- और अधिक बहु विषयक स्नातक शिक्षा की ओर बढ़ना ।
- संकाय और संस्थागत स्वायत्तता की ओर बढ़ना ।
- विद्यार्थियों के अनुभव में वृद्धि के लिए पाठ्यचर्या, शिक्षण– शास्त्र मूल्यांकन और विद्यार्थियों को दिए जाने वाले सहयोग में आमूल–चूल परिवर्तन करना ।

उच्चतर शिक्षा के बारे में इस नीति का मुख्य जोर उच्चतर शिक्षा संस्थानों को बड़े एवं बहु–विषयक विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और एचई आई कलस्टरों/ नॉलेज हबों में स्थानांतरित करके उच्चतर शिक्षा के विखंडन को समाप्त करना है । जिसमें प्रत्येक का लक्ष्य 3,000 या उससे भी अधिक छात्रों का उत्थान करना होगा । यह पूरी उच्चतर शिक्षा में छात्रों के सीखने के लिए विद्वानों और साथियों के जीवंत समुदाय निर्माण, विषयों की बीच उपजी खाईयों को पाटने छात्रों को उनके सम्पूर्ण मानसिक और चहुमुखी (कलात्मक, रचनात्मक, विश्लेषणात्मक और खेल) विकास करने में सक्षम, सक्रिय अनुसंधान समुदायों अन्तर– अनुशासनिक अनुसंधान सहित को विकसित करने, और संसाधनों, सामग्री और मनुष्य की कार्य कुशलता की बढ़ोत्तरी में मदद करेगी । भारतीय प्राचीन विश्वविद्यालयों

तक्षशिला, नालन्दा, वल्लभी और विक्रमशिला जिनमें भारत और अन्य देशों के हजारों छात्र जीवंत एवं बहु विषयक परिवेश में शिक्षा ले रहे थे, ने बड़ी सफलता का प्रदर्शन किया जो इस तरह के बड़े एवं बहु– विषयक अनुसंधान और शिक्षण विश्वविद्यालय ही कर सकते थे। भारत को बहुमुखी प्रतिभा वाले योग्य और अभिनव व्यक्तियों को बनाने के लिए इस परम्परा को वापस लाने की आवश्यकता है, जिससे कई देश पहले से ही शैक्षिक और आर्थिक रूप से इस दिशा में परिणत हो रहे हैं ।

उच्चतर शिक्षा के इस विज़न के लिए खासकर एक नई वैचारिक धारणा / समझ की जरूरत होगी जिसमें एक उच्चतर शिक्षा संस्थान (एचईआई) अर्थात एक विश्वविद्यालय या एक कॉलेज गठन शामिल है। विश्वविद्यालय से अभिप्राय एक ऐसा बहु–विषयक संस्थान, जो उच्चतर स्तरीय अधिगम (लर्निंग) के लिए उच्चतर श्रेणी के शिक्षण, शोध और समुदायिक भागीदारी के साथ स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम चलाता है। इसलिए अगर विश्वविद्यालय को परिभाषित करें तो कई तरह के संस्थान होंगे जो शिक्षण और शोध को बराबर महत्व देने वाले होंगे जैसे शोध गहन विश्वविद्यालय और ऐसे संस्थान जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षण पर अधिक बल देने वाले होंगे परंतु महत्वपूर्ण अनुसन्धान का संचालन करने वाले होंगे जैस शिक्षक गहन विश्वविद्यालय प्राथमिक तौर पर एक स्वायत्त डिग्री देने वाला कॉलेज (एसी) उच्चतर शिक्षा के एक बड़े बहु–विषयक संस्थान को संदर्भित करेगा जो स्नातक की डिग्री प्रदान करता है और मुख्य रूप से स्नातक शिक्षण पर केंद्रित है, हालांकि यह उस तक ही सीमित नहीं होगा और इसे उस तक सीमित करने की आवश्यकता नहीं है और यह आमतौर पर एक विशिष्ट विश्वविद्यालय से छोटा होगा। एचईआई को अपनी योजनाओं, कार्यों और प्रभावशीलता के आधार पर एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी में जाने की स्वायत्तता और स्वतंत्रता होगी। इन संस्थाओं को चिह्नित करने के लिए सबसे प्रमुख कार्य उनके लक्ष्यों तथा काम का फोकस होगा। प्रत्यायन प्रणाली इस प्रकार के संस्थानों (एचईआई) के लिए उचित रूप से भिन्न और प्रासंगिक मापदंडों का विकास और उपयोग करेगी। हालांकि, सभी प्रकार के संस्थानों (एचईआई) में उच्चतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षण–अधिगम अपेक्षाएं समान होंगी।

भारत में समग्र एवं बहु–विषयक तरीके से सीखने की एक प्राचीन परंपरा है, तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों से लेकर ऐसे कई व्यापक साहित्य है जो विभिन्न क्षेत्रों में विषयों के संयोजन को प्रकट करते हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य जैसे बाणभट्ट की कादंबरी शिक्षा को 64 कलाओं के ज्ञान के रूप में परिभाषित / वर्णित करती है; और इन 64 कलाओं में न केवल गायन और चित्रकला जैसे विषय शामिल हैं, बल्कि वैज्ञानिक क्षेत्र जैसे रसायनशास्त्र और गणित, व्यावसायिक क्षेत्र जैसे बढ़ई का काम और कपड़े सिलने का कार्य, व्यावसायिक कार्य जैसे औषधि तथा अभियांत्रिकी और साथ ही साथ सम्प्रेषण, चर्चा और वाद–संवाद करने के व्यवहारिक कौशल (सॉफ्ट स्किल्स) भी शामिल हैं। यह विचार कि इंसानी सृजन के सभी क्षेत्र (जिसमें गणित, विज्ञान, पेशेवर और व्यावसायिक विषय और व्यवहारिक कौशल शामिल हैं) को कलाओं के रूप में देखा जाना चाहिए, भारतीय चिंतन की देन है। विभिन्न कलाओं के ज्ञान के इस विचार, या जैसा कि आधुनिक युग में जिसे 'लिबरल आर्ट्स (कलाओं का एक उदार नजरिया) कहा जाता है, को भारतीय शिक्षा में पुनः शामिल करना ही होगा, चूँकि यह वही शिक्षा है जिसकी 21वीं शताब्दी में आवश्यकता होगी।

आकलन से पता चलता है की, स्नातक शिक्षा के दौरान ऐसी शैक्षणिक पद्धतियाँ जो एसटीईएम (विज्ञान, तकनीकी, अभियांत्रिकी और गणित) के साथ मानविकी और कला शिक्षा को समाहित करती हैं, तो रचनात्मकता और नवाचार, आलोचनात्मक चिंतन एवं उच्चतर स्तरीय चिंतन की क्षमता, समस्या समाधान योग्यता, समूह कार्य में दक्षता, सम्प्रेषण कौशल सीखने में गहराई और पाठ्यक्रम के सभी विषयों पर पकड़, सामाजिक और नैतिकता के प्रति जागरूकता आदि जैसे सकारात्मक शैक्षणिक परिणाम प्राप्त हुए हैं और साथ ही, समग्र और बहु–विषयक शिक्षा दृष्टिकोण के माध्यम से अनुसंधान में भी सुधार और बढ़ोत्तरी हुई है।

एक समग्र और बहु विषयक शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की सभी क्षमताओं– बौद्धिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, शारीरिक, भावात्मक तथा नैतिक को एकीकृत तरीके से विकसित करना होगा। ऐसी शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकासः कला, मानविकी, भाषा, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, और व्यावसायिक, तकनीकी और व्यावसायिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण 21 वीं सदी की क्षमता, सामाजिक जुड़ाव की नैतिकता; व्यवहारिक कोशल (सॉफ्ट स्किल्स) जैसे सम्प्रेषण, चर्चा,

वाद–विवाद और एक चुने हुए क्षेत्र या क्षेत्रों में अच्छी विशेषज्ञता में मदद करेगी। इस तरह की एक समग्र शिक्षा, लंबे समय तक व्यावसायिक, तकनीकी और पेशेवर विषयों सहित सभी स्नातक कार्यक्रमों का दृष्टिकोण होगा । एक समग्र और बहु–विषयक शिक्षा, जो कि भारत के इतिहास में सुन्दर ढंग से वर्णित की गई है वास्तव में आज के स्कूलों की जरूरत है, ताकि हम इक्कीसवीं शताब्दी और चौथी औद्योगिक क्रांति का नेतृत्व कर सकें। यहाँ तक कि अभियांत्रिकी संस्थान जैसे आई. आई. टी. कला और मानविकी के साथ समग्र और बहु–विषयक शिक्षा की ओर बढ़ेंगे। कला एवं मानविकी के छात्र भी विज्ञान सीखेंगे, कोशिश यहीं होगी की सभी व्यावसायिक विषय और व्यवहारिक कौशलों (सॉफ्ट स्किल्स) को हासिल करें। कला, विज्ञान और अन्य क्षेत्रों में भारत की खास विरासत इस तरह की शिक्षा की ओर बढ़ने में सहायक होगी ।

कल्पनाशील और लचीली पाठ्यक्रम संरचनाएं अध्ययन के लिए विषयों के रचनात्मक संयोजन को सक्षम करेंगी, और कई प्रवेश और निकास बिन्दुओं के विकल्प होंगे। इस तरह से आज की कठोर अनुशासनात्मक सीमाओं को हटाकर आजीवन सीखने की संभावनाओं को बढ़ावा मिलेगा। बड़े बहु– विषयक विश्वविद्यालयों में खातक स्तर (मास्टर और डॉक्टरेट) की शिक्षा कठोर अनुसंधान आधारित विशेषज्ञता प्रदान करने के साथ–साथ अकादमिक (शिक्षा जगत) सरकार और उद्योग सहित, बहु–विषयक कार्यों के अवसर भी प्रदान करेगा ।

डिग्री कार्यक्रमों की अवधि और संरचना में तदनुसार बदलाव किया जाएगा। स्नातक उपाधि 3 या 4 वर्ष की अवधि की होगी, जिसमे उपयुक्त प्रमाणपत्र के साथ निकास के कई विकल्प होंगे। उदाहरण के तौर पर, व्यावसायिक तथा पेशेवर क्षेत्र सहित किसी भी विषय अथवा क्षेत्र में 1 साल पूरा करने पर सर्टिफिकेट या 2 साल पूरा करने पर डिप्लोमा या 3 साल के कार्यक्रम के बाद स्नातक की डिग्री । 4 वर्षीय स्नातक प्रोग्राम, जिसमें बहु–विषयक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाएगा, क्योंकि इस दौरान यह विद्यार्थी की रूचि के अनुसार चुने हुए मेजर और माइनर पर ध्यान केंद्रित करने के अलावा समग्र तथा बहु विषयक शिक्षा का अनुभव लेने के अवसर प्रदान करता है ।

समग्र और बहु–विषयक शिक्षा के लिए आई. आई. टी. आई.आई.एम. आदि की तर्ज पर मेरू (बहु– विषयक शिक्षा और शोध विश्वविद्यालय) नामक मॉडल सार्वजनिक विश्वविद्यालयों की स्थापना की जाएगी। इन विश्वविद्यालयों का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में उच्चतमवैश्विक मानकों को अर्जित करना होगा। ये देशा भर में बहु–विषयक शिक्षा के उच्चतम मानक भी स्थापित करेंगे ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जौहरी बी. पी., पाठक पी. डी., भारतीय शिक्षा का इतिहास, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 29वां संस्करण 2013/14
2. चौहान अरुणा, समकालीन भारत एवं शिक्षा, राजस्थान प्रकाशन जयपुर, प्रथम संस्करण, 2016
3. प्रजापति सुरेश कुमार, शैक्षिक प्रबन्धन एवं विद्यालय संगठन, गोयल पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण –2006
4. www.shikshaniti.com
5. https://www.education.gov.in

❖◆❖